ISSN No. 2231-0045 VOL.II* ISSUE-IV*MAY-2014
Periodic Research

नगरीय परिवेश में धार्मिक विश्वास एवं कृत्य

सारांश

प्रत्येक समाज में ज्ञान का एक संगठित स्वरूप विद्यमान होता है। पारम्परिक समाजों में ज्ञान का यह स्वरूप मूलतः धार्मिक मान्यताओं और विश्वासों के रूप में व्यक्त होता है। इन मान्यताओं और विश्वासों के आधार पर समाज के सदस्यगण 'यथार्थ' की परिभाषा करते हैं और उसे अर्थ प्रदान करते हैं। यथार्थ के इस अर्थ और परिभाषा पर आधारित होकर सदस्यों के व्यवहार–प्रतिमान भी स्वरूपित होते हैं। धार्मिक विश्वासों के आधार पर स्वरूपित व्यवहार–प्रतिमानों के विशिष्ट रूपों को धार्मिक कृत्यों की संज्ञा प्रदान की जाती है।

मुख्य शब्द : सदस्यगण, संगठित, व्यवहार, गतिशील, संस्कृति, रिलीजन

मानवेन्द्र प्रताप सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
विभाग, समाजशास्त्र
दी0द0उ0गो0वि0वि0,
गोरखपुर

अर्चना सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
विभाग समाजशास्त्र,
श्यामेश्वर महाविद्यालय,
सिकरीगंज, गोरखपुर

प्रस्तावना

किसी पारम्परिक समाज में धार्मिक विश्वासों के आधार पर जगत की व्याख्या की जाती है। यह धार्मिक विश्वास ही धर्म का ज्ञानात्मक पक्ष है। धार्मिक कृत्यों के द्वारा जगत में मानव व्यवहार का वास्तविक संचालन होता है। धार्मिक विश्वासों और आनुष्ठानिक कृत्यों की एक संरचित व्यवस्था के रूप में धर्म सामाजिक नियंत्रण की एक प्रणाली के रूप में कार्य करता है। नियंत्रण की एक प्रणाली के रूप में धर्म समाज में सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्धों और उनके सापेक्षिक स्थानों का नियमन और व्यवस्थापन करता है।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य नगरीय परिवेश में रहने वाली हिन्दू महिलाओं में प्रचलित धार्मिक विश्वासों और कृत्यों का यथार्थ मापन करना है और इस सैद्धान्तिक अनुमान का सत्यापन करना है कि नगरीय परिवेश से प्रभावित महिलाओं में धार्मिक विश्वासों और कृत्यों का प्रचलन कम है अथवा कम हो रहा है।

धर्म की परिभाषा अत्यन्त कठिन है क्योंकि यह गतिशील और संस्कृति सापेक्ष अवधारणा है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से धर्म शब्द की उत्पत्ति 'धृ' धातु से होने के कारण इसका अर्थ है धारण करना, बनाये रखना आदि। अतः धर्म किसी पदार्थ अथवा व्यवस्था का वह गुण है जो उसे बनाये रखता है। (मोहापात्रा 1990 : 6)। अंग्रेजी भाषा में धर्म के लिए 'रिलीजन' शब्द का प्रयोग किया जाता है। रिलीजन लैटिन भाषा के शब्द :रिलिजियो' से उत्पन्न हुआ है जिसका मूल अर्थ है जोड़ना या बाँधना (द चेम्बर्स डिक्सनरी, 2003 : 1395) । इस प्रकार यह स्पष्ट है कि व्युत्पत्तिशास्त्र की दृष्टि से धर्म और रिलीजन दोनों शब्दों का मूल अर्थ एक ही है।

दुर्खीम के शब्दों में, ''धार्मिक घटनाएँ स्वाभाविक रूप से दो मूलभूत श्रेणियों में व्यवस्थित होती है यथा, विश्वास और संस्कार। प्रथम विचार की अवस्थाएँ है और प्रतिनिधानों से निर्मित होती हैं दूसरी क्रिया की निर्धारित विधियाँ है'' (दुर्खीम, 1965 : 51)।

धर्म का सबसे महत्वपूर्ण तत्व उसकी विश्वास व्यवस्था होती है। यहाँ तक की सम्पादित होने वाली समस्त धार्मिक क्रियाएँ विश्वास व्यवस्था पर ही आधारित होती हैं। धार्मिक कथाएँ और प्रतीक विश्वास व्यवस्था का ही एक हिस्सा हैं। दुर्खीम के अनुसार संसार में प्रचलित सभी धार्मिक विश्वासों की एक सामान्य विशेषता यह है कि वे समस्त वास्तविक और आदर्शात्मक वस्तु–जगत को पवित्र और साधारण इन दो वर्गों में विभाजित करते है। धार्मिक
विश्वास प्रतिनिधानों की वह व्यवस्था है जो पवित्र वस्तुओं की प्रकृति को व्यक्त करती है।

धर्म का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व धार्मिक क्रिया कलाप है। दुर्खीम के अनुसार धार्मिक क्रिया कलापों द्वारा सकारात्मक परिस्थितियाँ निर्मित होती है जिनसे लोग आपस में बँधते हैं। अनुष्ठान या संस्कार वे विधियाँ है जो यह बताती हैं कि पवित्र वस्तुओं के समक्ष मनुष्य को किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए। वस्तुतः संस्कार विश्वास का क्रियात्मक पक्ष है।

गाँव को परिभाषित करने के लिए कम से कम पाँच विशेषताओं को आधार के रूप में चुना जा सकता है जो इस प्रकार है – (1) जनांकिकीय आधार, (2) आर्थिक आधार, (3) सामाजिक आधार, (4) भौतिक आधार, (5) प्रकार्यातमक आधार।

इन आधारों को एक साथ दृष्टिगत रखकर सरलीकृत ढंग से यह कहा जा सकता है कि नगर वह स्थान है जहाँ कम से कम एक लाख की जनसंख्या एक साथ निवास करती हो, इस जनसंख्या का अधिकांश भाग गैर कृषि कार्यों पर निर्भर हो और उसमें अत्यन्त उच्चकोटि का स्तरीकरण एवं विभेदीकरण विद्यमान हो। उनकी धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषायी, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा जातीय, प्रजातीय एवं राष्ट्रिक पृष्ठभूमियाँ भिन्न–भिन्न हो। इस स्थान पर ईंट और सीमेन्ट से बनी अनेकानेक बहुमंजिली इमारते हों और सड़कें तथा गलियाँ तारकोल अथवा सीमेन्ट से निर्मित हो। इसके अतिरिक्त यहाँ निवास करने वाले लोग इस स्थान को वाणिज्य तथा व्यवसाय के केन्द्र के रूप में पहचानते हो और उनकी तथा आस–पास के गाँवों व कस्बों में रहने वाले लोगों की बाजार सम्बन्धी विविध आवश्यकताएँ यहाँ से पूरी होती हो (रामचन्द्रन, 1991 : 107–07)।

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र गोरखपुर महानगर है। प्रस्तुत अध्ययन का समग्र उन हिन्दू महिलाओं से निर्मित हुआ है जो गोरखपुर नगर के संयुक्त अथवा मूल परिवारों में रहती है और जिन्होंने कम से कम 18 वर्ष की अवस्था पूरी कर ली है।

प्रस्तुत अध्ययन में मुख्य बल तथ्यात्मक मापन पर होने के कारण इसका अभिकल्प वर्णनात्मक है तथापि विषय से सम्बन्धित कुछ अज्ञात पक्षों को जानने की चेष्टा के कारण प्रयुक्त अभिकल्प की प्रकृति गवेषणात्मक भी है। इस प्रकार व्यवहारिक धरातल पर प्रस्तुत शोध पत्र का अभिकल्प 'वर्णनात्मक एवं गवेषणात्मक' है।

प्रतिदर्श का चयन दो चरणों में पूरा किया गया है। प्रथम चरण में गोरखपुर महानगर के कुल 70 वार्डों में से दो वार्डों का चयन दैव निदर्शन की प्रणाली पर आधारित होकर किया गया है। द्वितीय चरण में चयनित वार्डों से 500 परिवारों का चयन उद्देश्य पूर्ण निदर्शन की प्रणाली पर आधारित होकर किया गया है।

उत्तरदात्रियों में शिक्षित महिलाओं के अतिरिक्त कम शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं के भी सम्मिलित होने के कारण तथ्य संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

संकलित तथ्यों के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि सभी उत्तरदात्रियाँ ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करती है। इससे स्पष्ट होता है कि उत्तरदात्रियों में नास्तिकता के दर्शन का प्रचलन कदापि नहीं है। इसी प्रकार उन महिलाओं की संख्या भी सर्वथा उपेक्षणीय है जो मानव शरीर में आत्मा के निवास को स्वीकार नहीं करती है क्योंकि 98.8ः उत्तरदात्रियों ने आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार किया है। यह भी तथ्य उल्लेखनीय है कि ग्रामीण परिवेश के निवासियों की ही भाँति नगरों में निवास करने वाली महिलाएँ भी बुरी नजर भूत–प्रेत और टोने–टोटके में विश्वास रखती हैं।

लुई ड्यूमा, दुर्खीम जैसे विद्वान यह मानते हैं कि धर्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार पवित्रता और अपवित्रता की भावना है। हिन्दू धर्म में मृत्यु के उपरान्त किये जाने वाले संस्कार अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इनके सन्दर्भ में पूछे जाने पर कि क्या मृत्यु के उपरान्त परिवार में उत्पन्न अशुद्धि को दूर करने हेतु कर्म, भोज, दान आदि का आयोजन आवश्यक है इस सम्बन्ध में प्रतिदर्श में शामिल 35.2ः महिलाएँ ऐसी है जो इस विश्वास को नहीं मानती। शिक्षा के बढ़ते स्तर के साथ महिलाओं में इस विश्वास के प्रति आस्था कम हुई है। तथापि उन महिलाओं का प्रतिशत ज्यादा है जो उपरोक्त विश्वास में आस्था रखती है।

विवाह जो वर्तमान समय में हिन्दू धर्म के अन्तर्गत महिलाओं के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है; के विषय में भी महानगर की महिलाओं का विचार जानने का प्रयास किया गया। 57% महिलाएँ अब विवाह को धार्मिक संस्कार न मानकर एक सामाजिक बन्धन के रूप में स्वीकार करती है जो एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन का संकेत है। सामाजिक समानता का विचार, कानून के तहत मिलने वाले समान अधिकार, शिक्षा का स्त्रियों के बीच प्रसार और स्त्रियों की बढ़ती हुई आर्थिक आत्मनिर्भरता इसका प्रमुख कारण है।

प्रतिदर्श में शामिल 75-4% महिलाएँ पति को जीवन साथी के रूप में देखती है। यद्यपि विवाह विच्छेद को अभी भी सामाजिक स्वीकृति नहीं मिल पायी है क्योंकि 73% महिलाएँ विवाह विच्छेद के विरूद्ध है और उसे पारिवारिक या पति–पत्नी के बीच तनाव को समाप्त करने के अन्तिम विकल्प के रूप में नहीं देखती।

97-8% महिलाओं का यह मानना है कि मृत्यु के उपरान्त होने वाले कर्मकाण्ड मृतक को मोक्ष प्रदान करते है। अतः यह कर्मकाण्ड अनिवार्य रूप से किये जाने चाहिए। इसी प्रकार बच्चे के जन्म और परिवार में मृत्यु के सम्बन्ध में पवित्रता और अपवित्रता की धारणा और उनसे जुड़े कर्मकाण्डों में नगरीय महिलाएँ परम्परागत विश्वासों को मानती है।

भारतीय समाज में पुत्र की प्राप्ति को सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से व्यक्ति के लिए बहुत आवश्यक माना जाता है। इस विश्वास के सन्दर्भ में प्रतिदर्श के अन्तर्गत चयनित महिलाओं में स्पष्ट विरोधाभास पाया गया। प्रतिदर्श के अन्तर्गत चयनित महिलाओं में 80-8% महिलाएँ माता–पिता को मोक्ष प्राप्ति हेतु पुत्र के जन्म की अनिवार्यता को स्वीकार नहीं करती। इससे स्पष्ट हो रहा है कि नगरों में रहने वाली महिलाओं की दृष्टि में पुत्र और पुत्री के बीच का अन्तर स्पष्ट रूप से कम हो रहा है।

मनुष्य की उपलब्धियाँ भाग्य या कर्म अथवा दोनों से प्रभावित होती है। इस सम्बन्ध में 18-4% महिलाएँ मानती हैं कि मनुष्य को जो कुछ प्राप्त होता है वह भाग्य की वजह से प्राप्त होता है। 35-2% महिलाओं का विश्वास है कि मनुष्य की उपलब्धियाँ उसके कर्म पर

निर्भर है और 40-4% का मानना है कि उपलब्धियाँ भाग्य और कर्म दोनों पर निर्भर करती है इससे स्पष्ट हो रहा है कि परम्परागत भारतीय समाज में जहाँ प्रायः लोग भाग्यवादी होते थे वहीं अब कर्म प्रधान हो गया है। शिक्षित महिलाओं ने भाग्य की अपेक्षा कर्म को ज्यादा महत्व दिया और यह स्वीकार किया कि कर्म या परिश्रम के द्वारा व्यक्ति जीवन में इच्छित लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

प्रतिदर्श में शामिल 79.8ः महिलाएँ मानती है कि गंगा नदी में स्नान से व्यक्ति के पाप धुल जाते है। इसी विश्वास के कारण आज इतनी प्रदूषित होने के बाद भी गंगा नदी का धार्मिक महत्व बना हुआ है। इसी प्रकार 73-2% महिलाएँ यह मानती हैं कि वैवाहिक जीवन के लिए वर–वधू की कुण्डलियों का मिलान आवश्यक है। 89.8% महिलाएँ ऐसी हैं जो कोई भी शुभ कार्य मलमास, खरवांस या पितृपक्ष में नहीं करना चाहती है।

भारतीय समाज में विधवा स्त्री धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से हेय समझी जाती है किन्तु वर्तमान समय में विधवा स्त्री के प्रति सामाजिक सोच में बदलाव आ रहा है जिसका प्रमाण 71% महिलाओं का यह स्वीकार करना है कि विधवा स्त्री का पुनर्विवाह किया जाना चाहिए।

'व्रत' जो धर्म के क्रियात्मक पक्ष का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है; के सन्दर्भ में सभी महिलाओं ने माना की वे कोई न कोई व्रत अवश्य करती है।

पूजा अनुष्ठान के सम्बन्ध में 68% महिलाओं ने माना कि वे प्रतिदिन पूजा करती है तथा 32ः महिलाएँ ऐसी है जो विशेष अवसरों पर पूजा करती है। 90ः महिलाएँ प्रतिदिन घर में पूजा करती हैं तथा 10ः मंदिर में पूजा हेतु जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि महानगर के हिन्दू परिवारों में पूजा अनुष्ठान के प्रति आस्था बनी हुई है।

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट हो रहा है कि नगरों में धर्म से जुड़े विश्वासों में महिलाओं की पूर्ण आस्था है। केवल कुछ विश्वासों के सम्बन्ध में महिलाओं के परम्परागत विचार बदले है।

आधुनिक शिक्षित, कामकाजी और 18–25 वर्ष की आयु के बीच की महिलाएँ सामाजिक समानता को बहुत महत्वपूर्ण मानती है और परिवार तथा समाज में अपनी व्यक्तिगत पहचान तथा स्थिति के सम्बन्ध में बहुत गम्भीर पायी गयी। वे पति को सम्मान की दृष्टि से देखती हैं किन्तु स्वयं को उसकी दासी मानने के लिए तैयार नहीं है।

इन विश्वासों के अलावा कुछ धार्मिक कृत्यों में भी उल्लेखनीय कमी आयी है, जैसे–निर्जल व्रत। शोधकर्त्री ने पाया कि प्रतिदर्श में शामिल महिलाएँ व्रत तो रखती है किन्तु बहुत सी ऐसी महिलाएँ है जो निर्जल व्रत को पानी पीकर या फलाहार लेकर रखती है। इसमें कामकाजी महिलाएँ विशेष रूप से आती हैं।

इससे स्पष्ट हो रहा है कि नगरीय परिवेश में रहने वाली हिन्दू महिलाएँ धार्मिक विश्वास और कृत्यों में आस्था तो रखती है किन्तु नगरों की आधुनिक जीवनशैली धार्मिक कृत्यों के सम्पादन के लिए कुछ सीमाएँ निर्धारित करती है। अतः लोग व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाते हुए इन कृत्यों को संक्षिप्त रूप से क्रियान्वित करते है। उपनयन, विवाह और मृत्यु से सम्बन्धित धार्मिक कृत्य इसमें विशेष रूप से आते है। आधुनिकीकरण और प्रौद्योगीकीय विकास के कारण महिलाओं के धार्मिक विश्वास और उनके द्वारा सम्पादित किये जाने वाले धार्मिक कृत्य प्रभावित हुए है। कुछ धार्मिक कृत्यों को थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ निभाया जाता है तथा कुछ का तार्किक महत्व कम होने के कारण उनसे जुड़े धार्मिक विश्वास एवं कृत्य कमजोर पड़ रहे है, कुछ को छोड़ दिया गया है और कुछ का रूपान्तरण कर दिया गया है। कुछ हद तक 19वीं शताब्दी से पश्चिम का जो प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ना आरम्भ हुआ था उसकी निरन्तरता आज भी बनी हुयी है।

References

1. Abraham, Francis (1982), Modern Sociological Theory : An Introduction, Delhi : Oxford Press.
2. Altekar, A.S. (1959), Position of Women in Hindu Civilization : From Prehistoric Times to the Present Day. Delhi : Motilal Banarsidas (Second Edition).
3. Beckford, James and Luckmann, Thomas
4. (Eds.) (1991). The Changing Face of Religion, New Delhi : Sage Publication.
5. Berger, Peter (1973). The Social Reality of Religion. Harmondsworth : Pengullr.
6. Bose, N.K. (1975). The Structure of Hindu Society. Delhi : Orient Longman.
7. Bhattacharya, N.N. (1990). A Glossary of Indian Religion Terms and Concepts, Delhi : Manohar Publication.
8. Bergel, E.E. (1955). Urban Sociology, Mcgraw Hill Book Company Inc., New York.
9. Durkheim, E. (1976). The Elementary Forms of Religious Life. (1912). London : Unwin Brothers.
10. Ramchandran, R. (1991). Urbnization and Urban System in India. Delhi : Oxford University Press.
11. The Chambers Dictionary (2003), New Edution, Allied Chambers (India) Ltd., New Delhi.

जीवन में पति का स्थान															
(व्यवसाय एवं शिक्षा के स्तर के आधार पर)															
शिक्षा का स्तर															
व्यवसाय	F	निरक्षर			हाईस्कूल		इण्टरमीडिएट		उच्च शिक्षा		कुल साक्षर		कुल योग		
		F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F
	(%)	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%
		जीवन साथी	परमेश्वर	योग	जीवन साथी	परमेश्वर	जीवन साथी	परमेश्वर	जीवन साथी	परमेश्वर	जीवन साथी	परमेश्वर	जीवन साथी	परमेश्वर	योग
गृहणी	325	07	05	12	43	22	66	24	123	35	232	81	239	86	325
	(65)	1.4	01	2.4	8.6	4.4	12.2	4.8	24.6	07	46.4	16.2	47.8	16.3	65
कामकाजी	175	12	05	17	19	9	25	7	82	16	126	32	138	37	175
	(35)	2.4	01	3.4	3.8	1.8	05	1.4	16.4	3.2	25.2	6.4	27.6	7.4	35
योग	500	14	10	29	62	31	91	31	205	51	358	113	377	123	500
	(100)	3.2	02	5.8	12.4	6.2	18.2	6.2	41	10.2	71.6	22.6	75.4	24.6	100

परिवार में जन्म एवं मृत्यु के अवसर पर उत्पन्न होने वाली अपवित्रता के सम्बन्ध में विश्वास
(आयु एवं जाति के आधार पर)

जाति													
आयु (वर्ष में)	F	सामान्य जाति			पिछड़ी जाति			अनुसूचित जाति			कुल योग		
	(%)	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F
		%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%
		हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग
18–25	140	85	25	110	15	15	30	-	-	-	100	40	140
	(28)	17	05	22	03	03	06	-	-	-	20	08	28
26–45	275	139	66	205	20	20	40	15	15	30	174	101	275
	(55)	27.8	13.2	41	04	04	08	03	03	06	34.8	20.2	55
45 वर्ष से	85	35	20	55	10	05	15	05	10	15	50	35	85
ऊपर	(17)	07	04	11	02	01	03	01	02	03	10	7	17
योग	500	259	111	370	45	40	85	20	25	55	324	176	500
	(100)	51.8	22.2	74	09	08	17	04	05	09	64.8	35.2	100

मोक्ष प्राप्ति हेतु पुत्र की आवश्यकता के सम्बन्ध में विश्वास														
(आयु एवं जाति के आधार पर)														
जाति														
आयु (वर्ष में)	F	सामान्य जाति			पिछड़ी जाति			अनुसूचित जाति			कुल योग		
	(%)	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F
		%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%
		हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग
18–25	140	10	100	110	05	25	30	.	.	.	15	125	140
	(28)	02	20	22	01	05	06	-	-	-	03	25	28
26–45	275	41	164	205	08	32	40	07	23	30	56	219	275
	(55)	8.2	32.8	41	106	6.4	08	1.4	4.6	6	11.2	43.8	55
45 वर्ष	85	15	40	55	05	10	15	05	10	15	25	60	85
ऊपर	(17)	03	08	11	01	02	03	01	02	03	05	12	17
योग	500	66	304	370	18	67	85	12	33	45	96	4.4	500
	(100)	13.2	60.8	74	3.6	13.4	17	2.4	6.6	09	19.2	80.8	100

परिवार में जन्म एवं मृत्यु के अवसर पर उत्पन्न होने वाली अपवित्रता के सम्बन्ध में विश्वास															
(व्यवसाय एवं शिक्षा के स्तर के आधार पर)															
शिक्षा का स्तर															
व्यवसाय	F	निरक्षर			हाईस्कूल		इण्टरमीडिएट		उच्च शिक्षा		कुल साक्षर		कुल योग		
	(%)	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F
		:	:	:	:	:	:	:	:	:	:	:	:	:	:
		हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	योग
गृहणी	325	7	5	12	44	21	47	43	101	57	192	121	199	126	325
	(65)	1.4	1	2.4	8.8	4.2	9.4	8.6	20.2	11.4	38.4	24.2	39.8	25.2	65
कामकाजी	175	175	14	3	17	22	6	28	4	61	37	111	47	125	50
	(35)	35	2.8	0.6	3.4	4.4	1.2	5.6	0.8	12.2	7.4	22.2	9.4	25	10
योग	500	21	8	29	66	27	75	47	162	94	303	168	324	176	500
	(100)	4.2	1.6	5.8	13.2	5.4	15	9.4	32.4	18.8	60.6	33.6	64.8	35.2	100

मोक्ष प्राप्ति हेतु पुत्र की आवश्यकता के सम्बन्ध में विश्वास															
(व्यवसाय एवं शिक्षा के स्तर के आधार पर)															
शिक्षा का स्तर															
व्यवसाय	₹	निरक्षर			हाईस्कूल		इण्टरमीडिएट		उच्च शिक्षा		कुल साक्षर		कुल योग		
		F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F
	(%)	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%
		हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	योग
गृहणी	325	11	1	12	18	47	16	74	151	41	272	52	273	325	325
	(65)	2.2	0.2	2.4	3.6	9.4	3.2	14.8	30.2	8.2	54.4	10.4	54.6	65	65
कामकाजी	175	15	2	17	13	15	12	20	4	94	29	129	44	131	175
	(35)	3	0.4	3.4	2.6	3	2.4	4	0.8	18.8	5.8	25.8	8.8	26.2	35
योग	500	26	3	29	31	62	28	94	11	245	70	401	96	404	500
	(100)	5.2	0.6	5.8	6.2	12.4	5.6	18.8	2.2	49	14	80.2	19.4	80.8	100

मनुष्य की उपलब्धियों के सम्बन्ध में विश्वास																							
(व्यवसाय एवं शिक्षा के स्तर के आधार पर)																							
शिक्षा का स्तर																							
व्यवसाय	F	निरक्षर				हाईस्कूल			इण्टरमीडिएट			उच्च शिक्षा			कुल साक्षर			कुल योग				
	(%)	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	
		(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)
		भाग्य	कर्म	दोनों पर	योग	भाग्य	कर्म	दोनो पर	भाग्य	कर्म	दोनों पर	भाग्य	कर्म	दोनों पर	भाग्य	कर्म	दोनों पर	भाग्य	कर्म	दोनों पर	भाग्य	कर्म	दोनों पर	योग
गृहणी	325	0.2	05	05	12	09	25	31	22	31	37	33	56	69	64	112	137	66	117	142	325		
	(65)	0.4	01	01	2.4	1.8	05	6.2	4.4	6.2	7.4	6.6	11.2	13.8	2.8	22.4	27.4	13.2	23.4	28.4	65		
कामकाजी	175	0.4	05	08	17	4	08	16	3	11	18	15	35	48	22	54	82	26	59	90	175		
	(35)	0.8	01	1.6	3.4	0.8	1.6	3.2	0.6	2.2	3.6	03	07	9.6	4.4	10.8	16.4	5.2	11.8	18	35		
योग	500	06	10	13	29	13	33	47	25	42	55	48	91	117	86	166	219	92	176	232	500		
	(100)	1.2	02	2.6	5.8	2.6	6.6	9.4	5	8.4	11	9.6	18.2	23.4	17.2	33.2	43.8	18.4	35.2	46.4	100		

जीवन में पति का स्थान													
(आयु एवं जाति के आधार पर)													
जाति													
आयु (वर्ष में)	F	सामान्य जाति			पिछड़ी जाति			अनुसूचित जाति			कुल योग		
	(%)	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F
		(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)
		जीवन साथी	परमेश्वर	योग	जीवन साथी	परमेश्वर	योग	जीवन साथी	परमेश्वर	योग	जीवन साथी	परमेश्वर	योग
18–25	140	87	23	3	24	06	30	-	-	-	111	29	140
	(28)	17.4	4.6	22	4.8	1.2	06	-	-	-	22.2	5.8	28

26–45	275	176	29	205	32	08	40	8	22	30	216	59	275
	(55)	35.2	5.8	41	6.4	1.6	08	1.6	4.4	06	43.2	11.8	55
45 वर्ष से	85	38	17	55	9	06-	15	3	12	15	50	35	85
ऊपर	(17)	7.6	3.4	11	1.8	1.2	03	0.6	2.4	03	10	7	17
योग	500	30.1	69	370	65	20	85	11	34	45	377	123	500
	(100)	60.2	13.8	74	13	04	17	2.2	6.8	09	75.4	24.6	100

मनुष्य की उपलब्धियों के सम्बन्ध में विश्वास
(आयु एवं जाति के आधार पर)

आयु वर्ष में	F	**सामान्य जाति**				**पिछड़ी जाति**				**अनुसूचित जाति**				**कुल योग**			
	(%)	F		F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F
		%		%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%
		भाग्य	कर्म	दोनों पर	योग	भाग्य	कर्म	दोनों पर	योग	भाग्य	कर्म	दोनों पर	योग	भाग्य	कर्म	दोनों पर	योग
18–25	140	27	33	50	110	8	14	8	30	-	-	-	-	35	47	58	140
	(28)	5.4	606	10	22	106	2.8	1.6	6	-	-	-	-	7	9.4	11.6	28
26–45	275	12	66	127	205	12	19	9	40	7	12	11	30	31	97	147	275
	(55)	(2.4)	13.2	25.4	41	204	3.8	1.8	8	1.4	2.4	2.2	6	6.2	19.4	29.4	55
45 वर्ष से	85	16	18	21	55	4	7	4	15	6	7	2	15	26	32	27	85
ऊपर	(17)	304	3.6	4.2	11	0.8	1.4	0.8	3	1.2	1.4	0.4	3	5.2	6.4	5.4	17
योग	500	55	117	198	371	24	40	21	85	13-	19	13	45	92	176	232	500
	(100)	11	23.4	39.6	74	4.8	8	4.2	17	2.6	3.8	2.6	9	18.4	35.2	46.4	100

परिवार में जन्म एवं मृत्यु के अवसर पर उत्पन्न होने वाली अपवित्रता के सम्बन्ध में विश्वास
(आयु एवं जाति के आधार पर)

आयु (वर्ष में)	F	सामान्य जाति			पिछड़ी जाति			अनुसूचित जाति			कुल योग		
	(%)	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F
		%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%
		हाँ	नहीं	योग्य	हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	योग
18–25	140	85	25	110	15	15	30	-	-	-	100	40	140
	(28)	17	05	22	03	03	06	-	-	-	20	08	28
26–45	275	139	66	205	20	20	40	15	15	30	174	101	275
	(55)	27.8	13.2	41	04	04	08	03	03	06	34.8	20.2	55
5 वर्ष से	85	35	20	55	10	05	15	05	10	15	50	35	85
ऊपर	(17)	07	04	11	02	01	03	01	02	03	10	7	17
योग	500	259	111	370	45	40	85	20	25	55	324	176	500
	(100)	51.8	22.2	74	09	08	17	04	05	09	64.8	35.2	100

परिवार में जन्म एवं मृत्यु के अवसर पर उत्पन्न होने वाली पवित्रता के सम्बन्ध में विश्वास
(व्यवसाय एवं शिक्षा के स्तर के आधार पर)

व्यवसाय	F	निरक्षर			हाईस्कूल		इण्टरमीडिएट		उच्च शिक्षा		कुल साक्षर		कुल योग		
	(%)	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F	F
		%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%	%
		हाँ	नहीं	योग	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	योग
गृहणी	325	7	5	12	44	21	47	43	101	57	192	121	199	126	325
	(65)	1.4	1	2.4	8.8	4.2	9.4	8.6	20.2	11.4	38.4	24.2	39.8	25.2	65

कामकाजी	175	175	14	3	17	22	6	28	4	61	37	111	47	125	50
	(35)	35	2.8	0.6	3.4	4.4	1.2	5.6	0.8	12.2	7.4	22.2	9.4	25	10
योग	500	21	8	29	66	27	75	47	162	94	303	168	324	176	500
	(100)	4.2	1.6	5.8	13.2	5.4	15	9.4	32.4	18.8	60.6	33.6	64.8	35.2	100

मनुष्य की उपलब्धियों के सम्बन्ध में विश्वास
(जन्म स्थान के आधार पर)

जन्म स्थान	F	F	F	F	F
	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)
		भाग्य	कर्म	दोनों पर	योग
ग्राम	275	68	73	134	275
	('55)	13.6	14.6	26.8	55
नगर	225	24	103	98	225
	(45)	4.8	20.6	19.6	45
योग	500	92	176	232	500
	(100)	18.4	35.2	46.4	100

मोक्ष प्राप्ति हेतु पुत्र की आवश्यकता के सम्बन्ध में विवरण
(जन्म स्थान के आधार पर)

जन्म स्थान	**F**	**F**	**F**	**F**
	%	**%**	**%**	**%**
		हाँ	नहीं	योग
ग्राम	275	50	225	275
	(55)	(10)	(45)	(55)
नगर	225	46	179	225
	(45)	9.2	35.8	45
योग	500	96	40.4	500
	100	19.2	80.8	100

जीवन में पति का स्थान
(जन्म स्थान के आधार पर)

जन्म स्थान	F	F	F	F
	(%)	(%)	(%)	(%)
		जीवन साथी	परमेश्वर	योग
ग्राम	275	186	89	275
	(55)	37.2	17.8	55
नगर	225	191	34	225
	(45)	38.2	6.8	45
योग	500	577	123	500
	(100)	75.4	24.6	100

परिवार में जन्म अथवा मृत्यु के अवसर पर उत्पन्न होने वाली
अपवित्रता के सम्बन्ध में विश्वास
(जन्म स्थान के आधार पर)

जन्म स्थान	F	F	F	F
	%	%	%	%
		हाँ	नहीं	योग
ग्राम	275	173	102	275
	(55)	34.6	20.4	55
नगर	225	151	74	22.5
	(45)	30.2	14.8	45
योग	500	324	176	500
	(100)	64.8	35.2	100